मुहम्मद यूनुस और ग्रामीण बैंक

पाउला वाई, चित्र : जमील



मुहम्मद यूनुस

और ग्रामीण बैंक

पाउला वाई, चित्र : जमील

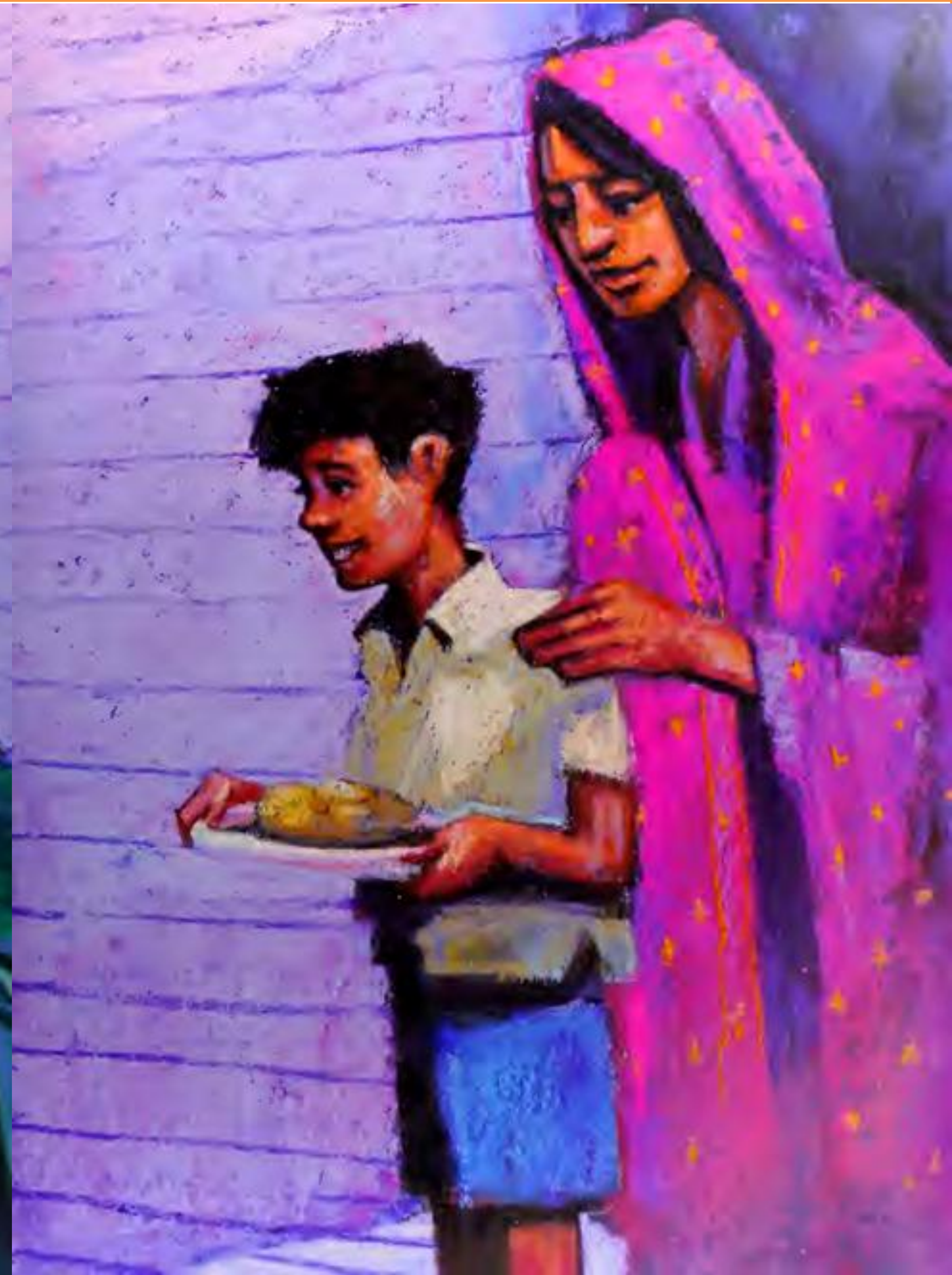


मुहम्मद का पेट गुर्राने लगा जब उसने और उसके भाई-बहनों ने माँ को चावल का आटा, चीनी और नारियल मिलाकर मीठे "पिठे" (नारियल की मिठाई) बनाते हुए देखा. माँ ने उस आटे से गोल लड्डू जैसे बनाए और उन्हें गर्म तेल की कढ़ाई में तलने डाला. प्रत्येक पिठा कड़ाही के ऊपर तैरा और फिर तलने के बाद कुरकुरा और सुनहरे रंग का बना. फिर माँ ने "पिठों" को एक थाली में ठंडा होने के लिए रख दिया

आठ साल के मुहम्मद ने उत्सुकता से एक पिठा उठाया. लेकिन इससे पहले कि वो उसे चख पाता, किसी ने दरवाजा खटखटाया. बाहर एक थकी हुई औरत अपनी छोटी लड़की के साथ खड़ी थी. महिला ने कहा कि उन दोनों ने कई दिनों से कुछ नहीं खाया था.

गरीब लोग अक्सर उनके घर का दरवाज़ा खटखटाते थे क्योंकि मुहम्मद की माँ दिल खोलकर गरीबों को खाना, पैसा और यहाँ तक कि उन्हें बच्चों को कपड़े भी देती थीं. मुहम्मद जानता था कि दरवाजे पर भूखे लोगों को उससे कहीं अधिक भोजन की जरूरत थी. मुहम्मद ने पिठा वापस प्लेट में रख दिया. उसकी माँ मुहम्मद पर मुस्कुराई और उन्होंने उस कृतज्ञ महिला और बच्चे को वो मिठाई खाते हुए देखा.





मुहम्मद यूनुस का जन्म 28 जून 1940 को हुआ था. वो नौ बच्चों में तीसरे सबसे बड़े थे. उनका बंगाली परिवार बंदरगाह शहर चटगांव में एक दो मंजिला घर में रहता था. चटगांव, उस समय भारत का हिस्सा था. चटगांव एक हलचल वाला शहर था. वहां डिलीवरी ट्रक घूमते थे और रंगीन रिक्शों में सवार यात्रियों को अपने पीछे छोड़ जाते थे. वहां की घनी भीड़-भाड़ वाली सड़कों पर भिखारी, व्यापारियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर घूमते थे. सड़कों के किनारों पर लोग खड़े होकर चाय की चुस्की लेते और चना-चूर, तली हुई दाल और छोलों का नाश्ता खाते थे.

मुहम्मद और उनके भाई-बहनों ने एक साथ मौज-मस्ती करने के कई तरीके खोजे थे. वे अपने घर की सपाट छत के पार एक-दूसरे का पीछा करते थे और सैनिक होने का नाटक करते थे. वे बांस और कागज से बनी पतंगें उड़ाते थे. उन्हें कभी-कभी स्कूल के बाद फिल्म देखने के लिए जाने दिया जाता था.



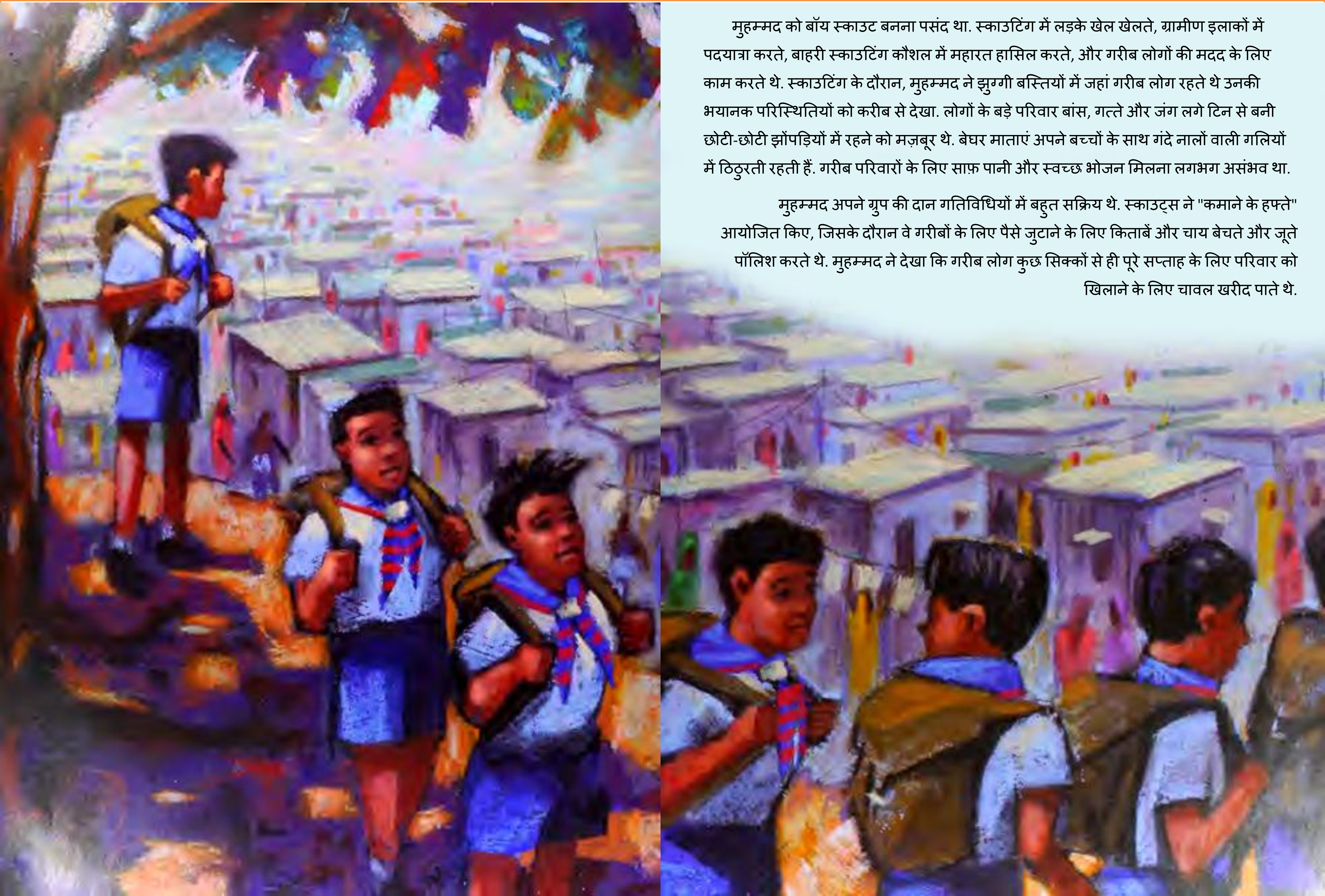




मुहम्मद के माता-पिता शिक्षा को बहुत महत्वपूर्ण मानते थे. उन्होंने सुनिश्चित किया कि उनके बच्चे कठिन अध्ययन करें. हालाँकि मुहम्मद के पिता, दुला मियां, सिर्फ आठवीं कक्षा पास थे लेकिन वो एक सफल आभूषण निर्माता थे. मुहम्मद की माँ, सोफिया खातून, केवल चौथी तक ही स्कूल गई थीं. लेकिन उन्हें अपने बच्चों को परंपरागत कहानियाँ पढ़ने और सुनाने का शौक था. माता-पिता को उम्मीद थी कि उनके बच्चे स्कूल खत्म करके एक दिन कॉलेज जाएंगे.

दुला मियां ने अपने बेटों को बॉय स्काउट्स जैसे संगठनों में शामिल होकर दुनिया का बारे में और जानकारी हासिल करने के लिए प्रोत्साहित किया. "दुनिया से सीखना ही सबसे बड़ी सीख है," उन्होंने अपने बच्चों से कहा.





मुहम्मद को बॉय स्काउट बनना पसंद था. स्काउटिंग में लड़के खेल खेलते, ग्रामीण इलाकों में पदयात्रा करते, बाहरी स्काउटिंग कौशल में महारत हासिल करते, और गरीब लोगों की मदद के लिए काम करते थे. स्काउटिंग के दौरान, मुहम्मद ने झुग्गी बस्तियों में जहां गरीब लोग रहते थे उनकी भयानक परिस्थितियों को करीब से देखा. लोगों के बड़े परिवार बांस, गत्ते और जंग लगे टिन से बनी छोटी-छोटी झोंपड़ियों में रहने को मज़बूर थे. बेघर माताएं अपने बच्चों के साथ गंदे नालों वाली गलियों में ठिठुरती रहती हैं. गरीब परिवारों के लिए साफ़ पानी और स्वच्छ भोजन मिलना लगभग असंभव था.

मुहम्मद अपने ग्रुप की दान गतिविधियों में बहुत सक्रिय थे. स्काउट्स ने "कमाने के हफ्ते" आयोजित किए, जिसके दौरान वे गरीबों के लिए पैसे जुटाने के लिए किताबें और चाय बेचते और जूते पॉलिश करते थे. मुहम्मद ने देखा कि गरीब लोग कुछ सिक्कों से ही पूरे सप्ताह के लिए परिवार को खिलाने के लिए चावल खरीद पाते थे.

जैसे-जैसे मुहम्मद बड़ा हुआ उसने गरीब लोगों की मदद करना जारी रखा. 1957 में, सत्रह वर्ष की आयु में, उसने ढाका विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग में दाखिला लिया अर्थशास्त्र में इस बात का अध्ययन करना होता है कि लोग पैसे, सामान और सेवाओं का कैसे उपयोग करते हैं. मुहम्मद ने सोचा कि अर्थशास्त्र का अध्ययन उसे सिखाएगा कि गरीब लोग कैसे अपने पैसे को बेहतर ढंग से इस्तेमाल कर सकते थे और उन्हें बचा सकते थे.



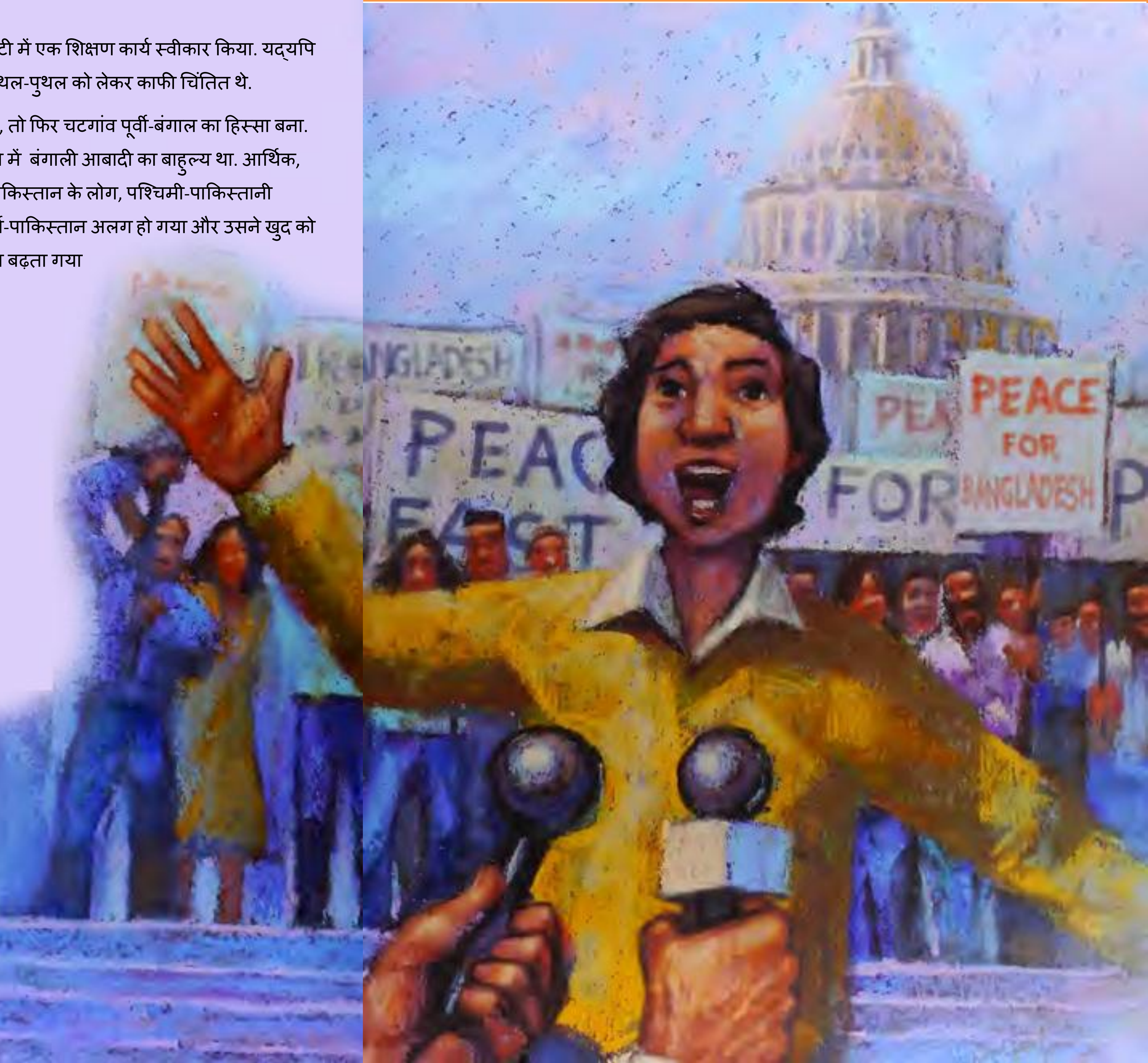
ढाका विश्वविद्यालय से स्नातक की डिग्री मिलने के बाद मुहम्मद एक शोध सहायक और व्याख्याता बने. फिर 1965 में, उन्होंने अमेरिका में अर्थशास्त्र पढ़ने के लिए प्रतिष्ठित "फुलब्राइट" छात्रवृत्ति जीती. अमेरिका में रहते समय उन्होंने कॉलेज के छात्रों को वियतनाम युद्ध के विरोध में शांति रैलियों का आयोजन करते देखा. वे विरोध मार्चों में शामिल हुए और उन्होंने धरना दिया. और जब तक उनकी बात नहीं सुनी गई, तब तक उन्होंने हिलने से इनकार किया. मुहम्मद, बाकी छात्रों के इस विश्वास से बहुत प्रभावित थे, कि वे अपने काम से लोगों की ज़िंदगी में कुछ अंतर ला सकते थे. और वो अपने पिता के शब्दों को कभी नहीं भूले: वो सच में वास्तविक दुनिया से सीख रहे थे.



1970 में मुहम्मद ने मिडिल टेनेसी स्टेट यूनिवर्सिटी में एक शिक्षण कार्य स्वीकार किया. यद्यपि वो अमेरिका में खुश थे, मुहम्मद अपने देश में हो रही उथल-पुथल को लेकर काफी चिंतित थे.

1947 में जब भारत में ब्रिटिश शासन समाप्त हुआ, तो फिर चटगांव पूर्वी-बंगाल का हिस्सा बना. बाद में वो पूर्वी पाकिस्तान का एक हिस्सा बना. इस क्षेत्र में बंगाली आबादी का बाहुल्य था. आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक मतभेदों के कारण, पूर्वी-पाकिस्तान के लोग, पश्चिमी-पाकिस्तानी सरकार से अपनी स्वतंत्रता चाहते थे. मार्च 1971 में पूर्वी-पाकिस्तान अलग हो गया और उसने खुद को बांग्लादेश नामक एक स्वतंत्र राष्ट्र घोषित किया. तनाव बढ़ता गया और जल्द ही पाकिस्तान और नए राष्ट्र बांग्लादेश के बीच में युद्ध छिड़ गया.

अपने लोगों के समर्थन में मुहम्मद ने विश्वविद्यालय परिसर में रैलियों का आयोजन किया. वो वाशिंगटन, डीसी भी गए, जहां उन्होंने अन्य बंगालियों के साथ कैपिटल हिल की सीढ़ियों पर प्रदर्शन किया. उन्होंने बांग्लादेश और पाकिस्तान के बीच शांति के लिए नारे लगाए. उन्होंने अपनी मातृभूमि की स्थिति के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए टेलीविजन और अखबार के पत्रकारों को इंटरव्यू दिए.



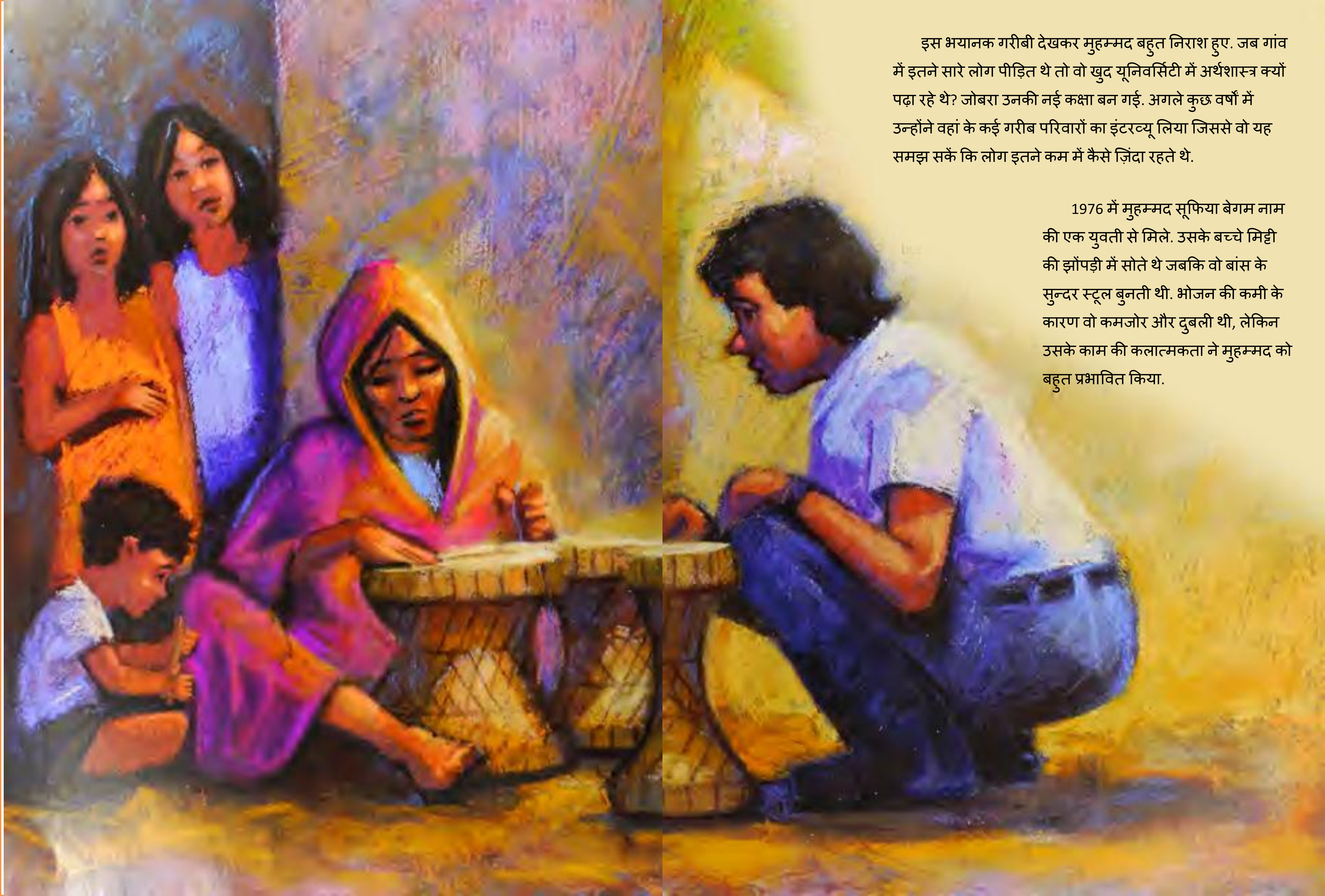


अंततः बांग्लादेश ने पाकिस्तान को हरा दिया, और 16 दिसंबर, 1971 को वो भीषण युद्ध समाप्त हुआ. युद्ध में तीन लाख से अधिक लोग मारे गए. युद्ध, सूखे और अकाल ने नवगठित देश को लगभग तबाह कर दिया.

तब मुहम्मद को बांग्लादेश वापिस लौटने के बारे में सोचा. 1972 में वो अपने वतन लौटे और उन्होंने चटगांव विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र विभाग के प्रमुख के रूप में नौकरी स्वीकार की.

अब मुहम्मद ने प्रत्यक्ष रूप से देखा कि युद्ध ने उनके देश को कितनी बुरी तरह प्रभावित किया था. हर सुबह विश्वविद्यालय के रास्ते में, वो अपनी कार में जोबरा गाँव से गुज़रते थे. सूखे ने फसलों को नष्ट कर दिया था. ग्रामीणों के पास न भोजन था और न पीने का पानी. नंगे पांव बच्चे और उनके माता-पिता भोजन खोजने की बेताब कोशिशों में, पास की उपजाऊ पहाड़ियों की ओर जाते थे. कुछ लोग खाने के लिए मुट्ठी भर चावल और हरी पत्तियां लेकर लौटते थे.





इस भयानक गरीबी देखकर मुहम्मद बहुत निराश हुए. जब गांव में इतने सारे लोग पीड़ित थे तो वो खुद यूनिवर्सिटी में अर्थशास्त्र क्यों पढ़ा रहे थे? जोबरा उनकी नई कक्षा बन गई. अगले कुछ वर्षों में उन्होंने वहां के कई गरीब परिवारों का इंटरव्यू लिया जिससे वो यह समझ सकें कि लोग इतने कम में कैसे ज़िंदा रहते थे.

1976 में मुहम्मद सूफिया बेगम नाम की एक युवती से मिले. उसके बच्चे मिट्टी की झोंपड़ी में सोते थे जबकि वो बांस के सुन्दर स्टूल बुनती थी. भोजन की कमी के कारण वो कमजोर और दुबली थी, लेकिन उसके काम की कलात्मकता ने मुहम्मद को बहुत प्रभावित किया.



मुहम्मद को पता चला कि सूफिया जैसी कई महिलायें अपने परिवारों का लालन-पालन करने के लिए अपनी बनाई चीज़ों को बाजार में बेचती थीं. स्टूल बनाने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले बांस की कीमत पांच टका, लगभग (22 अमरीकी सेंट) होती थी. सूफिया के पास 22 सेंट नहीं थे, इसलिए उसे वो पैसे उधार लेने पड़ते थे.

जोबरा के बैंक की छोटे क़र्ज़ देने में रुचि नहीं थी और वे गरीब लोगों को ऋण देने का जोखिम नहीं उठाना चाहते थे. इसलिए सूफिया को एक महाजन, एक साहूकार के पास जाना पड़ा. महाजन ने उसे वे 22 सेंट उधार दिए, जिसकी उसे जरूरत थी. सूफिया को उधार ली गई राशि पर एक प्रतिशत व्याज चुकाना था. लेकिन महाजन ने सूफिया की स्थिति का फायदा उठाया और उसके ऋण पर अनुचित रूप से बहुत ऊंची ब्याज दर वसूल की.

जब सूफिया स्टूल बेचकर अपने ऋण और ब्याज का भुगतान करती तो आमतौर पर उसके पास केवल दो सेंट ही बचते थे. और बांस खरीदने के लिए दो सेंट पर्याप्त नहीं होते थे. परिवार का भोजन खरीदने के लिए भी दो सेंट पर्याप्त नहीं होते थे. उसके कारण, सूफिया को महाजन से और पैसे उधार लेने के लिए मजबूर होना पड़ता था.





मुहम्मद को लगा कि सूफिया का जीवन प्रतिदिन केवल कुछ सेंट पर ही निर्भर करता था. मुहम्मद ने अपनी जेब में हाथ डाला. उसकी जेब में कई सिक्के साथ-साथ झनके. वो आसानी से सूफिया को बाँस खरीदने के लिए आवश्यक 22 सेंट दे सकता था. तब सूफिया पर महाजन का कुछ भी बकाया नहीं होता और वो सारा मुनाफा अपने लिए रख सकती थी.

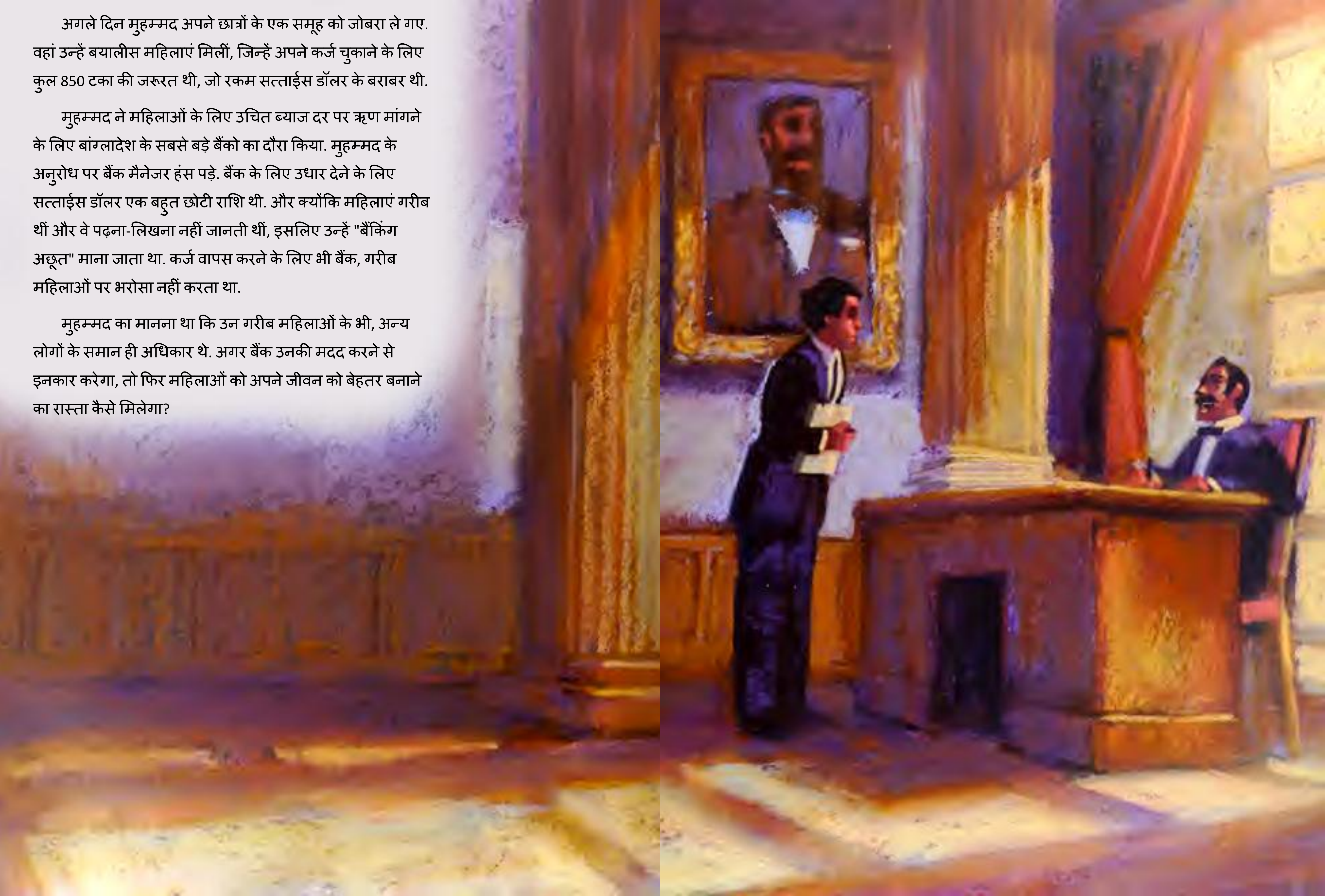


लेकिन मुहम्मद हिचकिचाया. अगर उसने सूफिया को पैसे दिए, तो वो हमेशा दान के लिए अजनबियों पर निर्भर रहेगी. 22 सेंट देने से लंबी अवधि में उसकी समस्याओं का समाधान नहीं होगा. उसे सूफिया और अन्य लोगों को गरीबी के चक्र से बाहर निकालने के लिए कोई रास्ता खोजने की जरूरत थी.

अगले दिन मुहम्मद अपने छात्रों के एक समूह को जोबरा ले गए. वहां उन्हें बयालीस महिलाएं मिलीं, जिन्हें अपने कर्ज चुकाने के लिए कुल 850 टका की जरूरत थी, जो रकम सत्ताईस डॉलर के बराबर थी.

मुहम्मद ने महिलाओं के लिए उचित ब्याज दर पर ऋण मांगने के लिए बांग्लादेश के सबसे बड़े बैंको का दौरा किया. मुहम्मद के अनुरोध पर बैंक मैनेजर हंस पड़े. बैंक के लिए उधार देने के लिए सत्ताईस डॉलर एक बहुत छोटी राशि थी. और क्योंकि महिलाएं गरीब थीं और वे पढ़ना-लिखना नहीं जानती थीं, इसलिए उन्हें "बैंकिंग अछूत" माना जाता था. कर्ज वापस करने के लिए भी बैंक, गरीब महिलाओं पर भरोसा नहीं करता था.

मुहम्मद का मानना था कि उन गरीब महिलाओं के भी, अन्य लोगों के समान ही अधिकार थे. अगर बैंक उनकी मदद करने से इनकार करेगा, तो फिर महिलाओं को अपने जीवन को बेहतर बनाने का रास्ता कैसे मिलेगा?

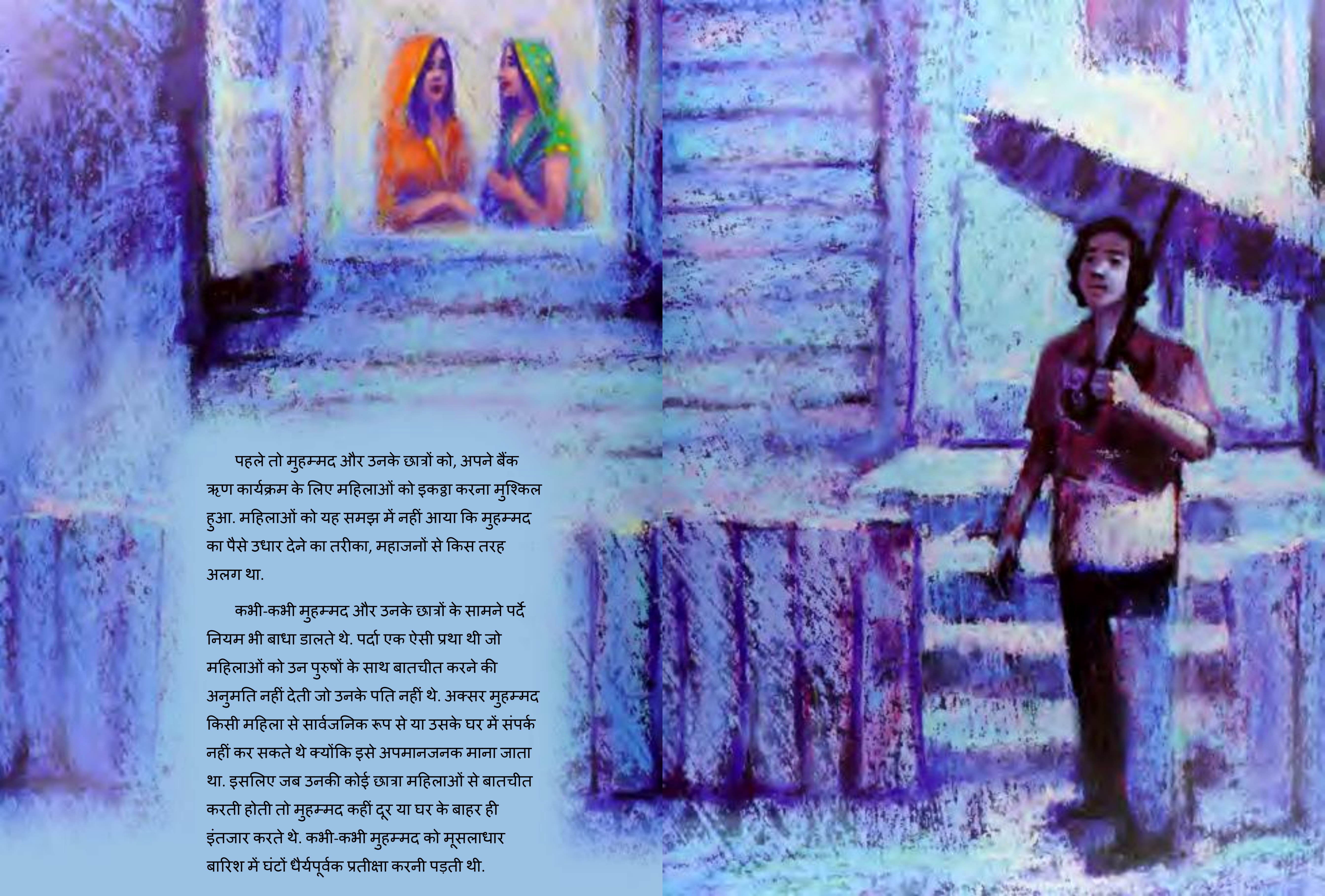


कई बैंकों द्वारा ठुकराए जाने के बाद, मुहम्मद ने एक नया बैंक शुरू करने का फैसला किया जो गरीबों को पैसा उधार देगा. 1977 में उन्होंने ग्रामीण बैंक का शुभारंभ किया.

ग्रामीण बैंक में गरीब लोग, कम ब्याज दरों पर बहुत कम मात्रा में भी क़र्ज़ ले सकते थे. इन छोटे कर्ज़ों को "माइक्रो-क्रेडिट" के नाम से जाना जाने लगा.

उधार लेने वालों को पांच के समूहों में बांटा गया, और प्रत्येक समूह को सहमत राशि पर उधार दिया गया. फिर समूह के सदस्यों ने सही समय पर अपने ऋण का भुगतान करने के लिए मिलकर काम किया. मुहम्मद का मानना था कि क़र्ज़ लेने वालों को समूहों में रखने से एक समर्थन प्रणाली तैयार होगी जिसमें प्रत्येक सदस्य की सफलता पूरे समूह की जिम्मेदारी होगी.





पहले तो मुहम्मद और उनके छात्रों को, अपने बैंक ऋण कार्यक्रम के लिए महिलाओं को इकट्ठा करना मुश्किल हुआ. महिलाओं को यह समझ में नहीं आया कि मुहम्मद का पैसे उधार देने का तरीका, महाजनों से किस तरह अलग था.

कभी-कभी मुहम्मद और उनके छात्रों के सामने पर्दे नियम भी बाधा डालते थे. पर्दा एक ऐसी प्रथा थी जो महिलाओं को उन पुरुषों के साथ बातचीत करने की अनुमति नहीं देती जो उनके पति नहीं थे. अक्सर मुहम्मद किसी महिला से सार्वजनिक रूप से या उसके घर में संपर्क नहीं कर सकते थे क्योंकि इसे अपमानजनक माना जाता था. इसलिए जब उनकी कोई छात्रा महिलाओं से बातचीत करती होती तो मुहम्मद कहीं दूर या घर के बाहर ही इंतजार करते थे. कभी-कभी मुहम्मद को मूसलाधार बारिश में घंटों धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करनी पड़ती थी.



मुहम्मद और उनके छात्रों का धैर्य, मेहनत और दृढ़ता आखिर रंग लाई. उन्होंने महिलाओं का विश्वास जीता और उनमें से कई ने ग्रामीण बैंक के ऋण कार्यक्रम में हिस्सा लिया.

बैंक में महिलाओं ने अपने पैसों का प्रबंधन करना सीखा. बैंकिंग कैसे काम करती है, यह जानने के लिए प्रत्येक समूह ने सात दिवसीय प्रशिक्षण लिया. मुहम्मद ने एक महत्वपूर्ण पाठ - सोलह निर्णयों का एक सेट बनाया. महिलाओं को उन्हें याद रखकर उनका पालन करना था. इन पाठों ने महिलाओं को जीवन की सकारात्मक आदतों के बारे में सिखाया. इन बिंदुओं में व्यावहारिक सलाह थी जो महिलाओं को अपना जीवन बदलने में मदद देती थी - जैसे सुरक्षित उबला हुआ पानी पीना, और बच्चों को रोज़ाना स्कूल भेजना.

ऋण स्वीकृत होने के लिए, प्रत्येक समूह को एक परीक्षा पास करनी होती थी. उससे महिलाएं ऋण कार्यक्रम को अच्छी तरह समझ जाती थीं. महिलाओं ने बहुत मेहनत से पढ़ाई की और अंत में सभी ने परीक्षा पास की. जब मुहम्मद ने सूफिया के समूह को सत्ताईस डॉलर का ऋण दिया तो सूफ़िया ने उसे इस तरह कसकर पकड़ा जैसे वो कोई कीमती गहना हो.

सूफिया ने अपने हिस्से के क़र्ज़ से मिठाई पकाने के लिए सामग्री और चूड़ियों जैसा सजाने का सामान खरीदा, जिसे वो बाजार में अपने बांस के स्टूलों के साथ बेच सकती थी. अब उसने पहले की तुलना में और अधिक पैसा कमाया. उससे उसने अपना क़र्ज़ चुकाया और अपने परिवार का लालन-पालन भी किया. जब सूफ़िया ने अपनी मेहनत की कमाई से अपने बच्चों के लिए चावल खरीदे तो वो गर्व से झूम उठी.

मुहम्मद को वो गरीब लोग याद आए जो बचपन में उसके माता-पिता के घर खाना मांगने आते थे. उन्होंने अपने बॉय स्काउट ज़माने के बेघर लोगों और उनकी झुग्गियों को भी याद किया, और चटगांव विश्वविद्यालय के रास्ते में उन्होंने जोबरा के भूखे लोगों को भी याद किया. तब उन्हें वो दिन याद आया जब वो पहली बार सूफिया बेगम से मिले थे. मुहम्मद इस बात से खुश थे कि उन्होंने गरीबों के जीवन को बेहतर बनाने का एक अच्छा तरीका खोजा था.

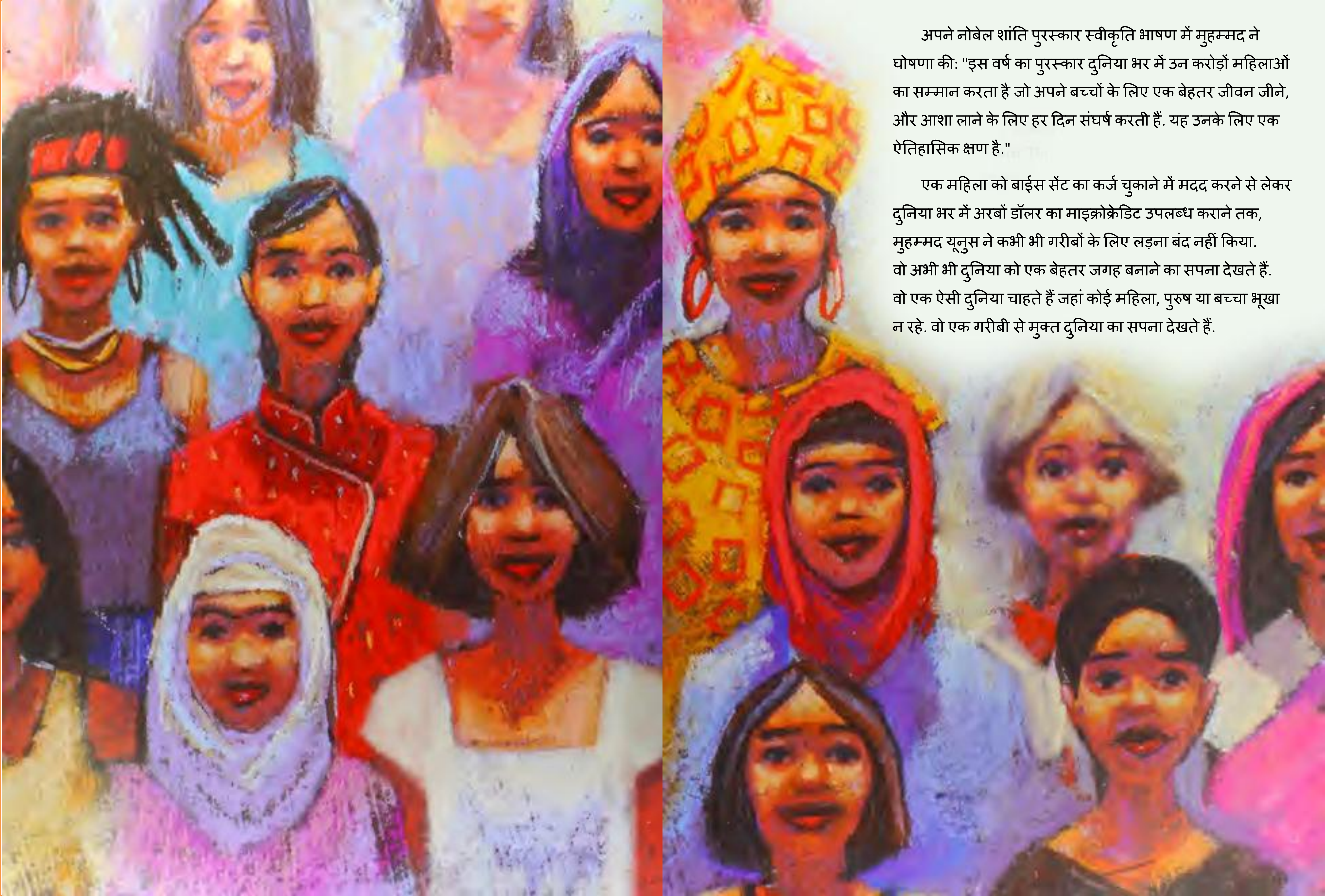




जल्द ही मुहम्मद, "गरीबों के बैंकर" के रूप में जाने जाने लगे. आने वाले वर्षों में, ग्रामीण बैंकों ने दुनिया भर में बारह मिलियन लोगों को माइक्रो-क्रेडिट में, दस बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक का क़र्ज़ दिया. क़र्ज़ लेने वालों में चौरासी प्रतिशत महिलाएं थीं.

2006 में मुहम्मद यूनुस और ग्रामीण बैंक को संयुक्त रूप से नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया. यह प्रतिष्ठित पुरस्कार उस व्यक्ति या समूह को दिया जाता है, जिसने राजनीतिक संघर्ष, गरीबी और युद्ध से तबाह हुए देशों में शांति को बढ़ावा देने में बहुत साहस दिखाया हो. नोबेल पुरस्कार समिति ने मुहम्मद और ग्रामीण बैंक की "नीचे से आर्थिक और सामाजिक विकास के उनके प्रयासों के लिए" और यह दिखाने के लिए प्रशंसा की कि "गरीब से गरीब भी, अपने विकास के लिए खुद काम कर सकते हैं."





अपने नोबेल शांति पुरस्कार स्वीकृति भाषण में मुहम्मद ने घोषणा की: "इस वर्ष का पुरस्कार दुनिया भर में उन करोड़ों महिलाओं का सम्मान करता है जो अपने बच्चों के लिए एक बेहतर जीवन जीने, और आशा लाने के लिए हर दिन संघर्ष करती हैं. यह उनके लिए एक ऐतिहासिक क्षण है."

एक महिला को बाईस सेंट का कर्ज चुकाने में मदद करने से लेकर दुनिया भर में अरबों डॉलर का माइक्रोक्रेडिट उपलब्ध कराने तक, मुहम्मद यूनुस ने कभी भी गरीबों के लिए लड़ना बंद नहीं किया. वो अभी भी दुनिया को एक बेहतर जगह बनाने का सपना देखते हैं. वो एक ऐसी दुनिया चाहते हैं जहां कोई महिला, पुरुष या बच्चा भूखा न रहे. वो एक गरीबी से मुक्त दुनिया का सपना देखते हैं.



अंत के शब्द

बांग्लादेश में मुहम्मद यूनुस के ग्रामीण बैंक की सफलता ने, रूस सहित कई अन्य देशों को भी प्रेरित किया. इज़राइल, सऊदी अरब. मेक्सिको, मिस्र, घाना, चीन और फिलीपींस जैसे देशों ने अपने स्वयं के माइक्रो-फाइनेंस संगठन शुरू किए हैं. दुनिया भर में ग्रामीण बैंक के 97 प्रतिशत ग्राहकों ने सफलतापूर्वक अपने ऋण का भुगतान किया है. ग्रामीण बैंक ने गरीब छात्रों को 180,000 से अधिक अंतर्राष्ट्रीय छात्रवृत्तियां भी प्रदान की हैं ताकि वे अपनी शिक्षा जारी रख सकें.

2012 के अमेरिकी जनगणना ब्यूरो के आंकड़ों के अनुसार अगर अमरीका में, अगर चार लोगों के परिवार की वार्षिक आय 23,681 डॉलर से कम हो तो वे गरीबी की रेखा से नीचे होते हैं. उसके अनुसार अमरीका में 46.5 मिलियन लोग गरीबी रेखा से नीचे हैं, जिसमें 16.1 मिलियन बच्चे शामिल हैं. गरीबी रेखा से नीचे रहने का मतलब होता है कि किसी व्यक्ति के पास पर्याप्त भोजन का अभाव होना.

2008 में ग्रामीण-अमेरिका, न्यूयॉर्क शहर में खुला. 2013 तक, बैंक ने चार्लोट, उत्तर कैरोलिना इंडियानापोलिस, इंडियाना; ओमाहा, नेब्रास्का; लॉस एंजिल्स और सैन फ्रांसिस्को क्षेत्र, कैलिफोर्निया में भी शाखाएँ खोली थीं. ग्रामीण-अमेरिका ने छियालीस हजार से अधिक महिलाओं को लगभग 99 मिलियन डॉलर का कुल ऋण दिया है. उसके नतीजतन, बहुत से कम आय वाले लोग आर्थिक रूप से स्वतंत्र हुए हैं और खुद को गरीबी से बाहर निकालने में सक्षम हुए हैं.



नोबेल पुरस्कार विजेता मुहम्मद यूनुस अपने नोबेल शांति पुरस्कार पदक और डिप्लोमा के साथ - 10 दिसंबर 2006

2011 में बांग्लादेश की सरकार ने मुहम्मद यूनुस को ग्रामीण बैंक से इस्तीफा देने के लिए मजबूर किया, यह कहते हुए कि अब वो सत्तर वर्ष से अधिक उम्र के हो गए थे. प्रबंध निदेशक के पद के लिए वो उम्र कानूनी आयु सीमा से परे थे. प्रोफेसर यूनुस और ग्रामीण बैंक ने यूनुस को बैंक के प्रमुख के रूप में बने रहने की अपील दायर की, लेकिन बांग्लादेश के सुप्रीम कोर्ट ने अपील खारिज कर दी. इसलिए 12 मई 2011 को, मुहम्मद यूनुस ने आधिकारिक तौर पर ग्रामीण बैंक के प्रबंध निदेशक का पद छोड़ दिया. अब वे यूनुस सेंटर के अध्यक्ष हैं और ग्रामीण क्रिएटिव लैब के सह-संस्थापक हैं.

दोनों संगठनों ने गरीबों को पैसा उधार देने से आगे के काम का विस्तार किया है. वे सामाजिक व्यवसाय की अवधारणा को भी अपनाते हैं और ऐसे संस्थानों को बढ़ावा देते हैं जिनका प्राथमिक उद्देश्य समाज की सेवा करना और शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण और हरित ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में काम करना है.

आज मुहम्मद यूनुस अपनी दूसरी पत्नी अफरोजी बेगम के साथ बांग्लादेश में रहते हैं, जो जहाँगीरनगर विश्वविद्यालय में भौतिकी की प्रोफेसर हैं. उनकी छोटी बेटी दीना भी बांग्लादेश में रहती है. उनकी पहली शादी वेरा फोरोस्तेंको से हुई थी. उनसे उनकी बड़ी बेटी, मोनिका, एक पेशेवर ओपेरा गायक है जो न्यूयॉर्क में मेट्रोपॉलिटन ओपेरा और अन्य संगीत समूहों सहित ओपेरा कंपनियों के साथ अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शन करती हैं.

नोबेल शांति पुरस्कार के अलावा, मुहम्मद यूनुस को कई अन्य सम्मान मिले हैं. उनमें विश्व खाद्य पुरस्कार (1994) है, जो उन व्यक्तियों को सम्मानित करता है जिन्होंने दुनिया में भोजन की मात्रा या उपलब्धता में सुधार करने में मदद की हो; सिडनी शांति पुरस्कार (1908), ऑस्ट्रेलिया द्वारा न्याय के साथ शांति प्राप्त करने वाले कार्य के लिए दिया जाता है; सांस्कृतिक या सार्वजनिक कार्यों में महत्वपूर्ण योगदान के लिए व्यक्तियों को दिया जाने वाला यूनाइटेड स्टेट्स प्रेसिडेंशियल मेडल ऑफ़ फ्रीडम (2009); और कांग्रेसनल गोल्ड मेडल (2010), अमेरिकी कांग्रेस द्वारा किसी व्यक्ति या संस्था द्वारा दी जाने वाली उपलब्धि के लिए सर्वोच्च नागरिक सम्मान है. मुहम्मद यूनुस को दुनिया भर के विश्वविद्यालयों ने अड़तालीस मानद डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान की हैं.



मैं अपने आस-पास के लोगों की मदद करने के लिए तत्काल कुछ करना चाहता था. भले ही मैं एक ही इंसान की ज़िंदगी कुछ आसान बना सकूं."

- मुहम्मद यूनुस